ओ३म्

-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्वाध्याय शिविर का तीसरा दिन-

‘ईश्वर का ध्यान व चिन्तन करते हुए जीवात्मा परमात्मा में स्थित हो जाता है: डा. सोमदेव शास्त्री’

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

गुरुकुल पौंधा देहरादून के 18वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और गुरुकुल ने मिलकर यहां एक चार दिवसीय ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर के तीसरे दिन बुधवार 31 मई, 2017 को प्रातः 10 बजे से आरम्भ सत्र में वैदिक विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री जी ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उपासना विषय को आगे बढ़ाते हुए कहा कि आहर विषयक योगों में एक मिथ्या योग होता जो सर्दी व जुकाम आदि में कोल्ड ड्रिंक अथवा आईसक्रीम जैसे पदार्थों का सेवन करने को कहते हैं। इनके सेवन से स्वास्थय बिगड़ता है। सम्यक् योग का तात्पर्य शरीर की आवश्यकता के अनुरूप हितकर वस्तुओं का सेवन करना होता है। आचार्य जी ने कहा कि समाधि योग की आठ सीढ़िया यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि हैं। सन्ध्या का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि सन्ध्या में 19 मन्त्र हैं। सभी मनुष्यों को कम से कम आधा घण्टा ईश्वरोपासना अवश्य करनी चाहिये। सन्ध्या में मन को प्रकृति से हटाकर परमात्मा में लगाना होता है। आचार्य जी ने कहा कि बाह्य विषयों से मन को हटाने से जीवात्मा अपने स्वरूप में स्थित हो जाता है। इसके बाद ईश्वर के ध्यान व चिन्तन को जारी रखते हुए जीवात्मा परमात्मा में स्थित होता है।

उन्होंने बताया कि जीवात्मा और परमात्मा देखने की नहीं अपितु अनुभव करने की वस्तुएं हैं। समाधि के अतिरिक्त जीवात्मा की स्थिति वृत्तियों के अनुरूप होती है। यह वृत्तियां क्लिष्ट व अक्लिष्ट दो प्रकार होती हैं। क्लिष्ट वृत्ति क्लेश पहुंचाने वाली होती हैं तथा अक्लिष्ट वृत्तियां वह होती हैं जिनसे जीवात्मा को कोई दुःख नहीं पहुंचता। मन के अनुकूल चीजों से सुख व प्रतिकूल चीजों से दुःख मिलता है। यह क्लष्टि एवं अक्लिष्ट वृत्तियां पांच प्रकार की होती हैं जिन्हें प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा व स्मृति के नाम से जानते हैं। आचार्य जी ने इन पांच वृत्तियों के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने विपर्यय वृत्ति का उल्लेख कर कहा विपरीत वा मिथ्या ज्ञान को विपर्यय वृत्ति कहते हैं। इसका उदाहरण देते हुए आपने कहा कि अंधेरे में रस्सी देखकर सर्प की भ्रान्ति होना विपर्यय वृत्ति के कारण होता है। विकल्प वृत्ति का उदाहरण देते हुए आपने कहा कि आकाश पुष्प व सींग वाला मनुष्य इसके उदाहरण होते हैं। यह नाम शब्द मात्र हैं परन्तु इन नामों की संज्ञा वाली वस्तुओं का अस्तित्व नहीं होता। निद्रा एवं स्मृति वृत्तियों पर भी विद्वान वक्ता ने प्रकाश डाला। आचार्य जी ने कहा कि समाधि की तुलना निद्रा के साथ की जाती है। समाधि में मनुष्य में सतो गुण का प्रभाव होता है। समाधिवस्था में वह जीवात्मा व परमात्मा दोनों का अनुभव करता है व उसे ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। निद्रा में उसे किसी प्रकार की प्रतीती नहीं होती।

डा. सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि जब समाधि का अभ्यास हो जाता है तो उपासक उसमें घंटो बैठा रहता है, उसे समय का पता नहीं चलता है। आचार्य जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द 18 घंटे व उससे अधिक भी समाधि में बैठा करते थे, ऐसा उल्लेख उनके जीवन चरित्रों में आता है। स्मृति वृत्ति का उल्लेख कर आचार्य जी ने कहा कि कर्मो के संस्कारों का मन पर प्रभाव होना स्मृति कहलाता है। आचार्य जी ने कहा कि पांचों इन्द्रियों के अपने अपने विषयों से सीधे सम्पर्क से जो भ्रान्तिरहित ज्ञान होता है वह प्रत्यक्ष कहलाता है। अनुमान प्रमाण की चर्चा कर आचार्य जी ने कहा कि अनेक वस्तुओं को अनुमान के आधार पर जाना

जाता है। अनुमान से जिन पदार्थों को जाना जाता है उनका प्रत्यक्ष अनुभव पहले किया हुआ होता है। इसका उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि धुएं को देखकर उस स्थान पर अग्नि का ज्ञान होता है। यह अग्नि व धुएं को हमने पहले अनेकों बार देखा होता है अतः दूर से धुएं मात्र को देखकर हमें वहां निश्चित रूप से अग्नि होने का अनुमान होता है। आचार्य जी ने शब्द प्रमाण को आगम प्रमाण बताया। जिस प्रकार से हम माता-पिता द्वारा बताई बातों पर पूर्ण विश्वास करते हैं उसी प्रकार वेद की बातें हैं जिन पर पूर्ण विश्वास रखना शब्द प्रमाण कहलाता है। आचार्य जी ने कहा कि ऋषि परमात्मा की सत्ता का अनुभव करने वाले समाधि सिद्ध व ईश्वर के द्रष्टा को कहते हैं। उन्होंने कहा कि शब्द प्रमाण भी वेदों के अनुकूल बातों का ही होता है। उन्होंने कहा कि ऋषि के पीछे शब्द भागते है और मनुष्य शब्दों के पीछे भागता है। आचार्य जी ने कहा कि किसी विषय की इच्छा होने व उसकी उपलब्धि न होने पर उसके हानिकारक प्रभाव का चिन्तन करने से उस इच्छा का दमन व उससे विरक्ति होती है। इसके कुछ उदाहरण भी आचार्य जी ने दिये। आचार्य जी ने इस बीच भक्त फूल सिंह की कथा भी सुनाई और कहा कि आर्यसमाजी बनने पर उन्होंने न केवल रिश्वत लेना ही छोड़ा अपितु अतीत में जिन व्यक्तियों से रिश्वत ली थी उनके घर जा जाकर उनका धन लौटाया। इसके लिए उसने अपनी सम्पत्तियां भी बेच डाली थी। रिश्वत के धन पर ब्याज का विचार कर उन्होंने विद्यालय खोले जो आज महाविद्यालय और विश्वविद्यालय का रूप ले चुके हैं। आचार्य जी ने बताया कि इस व्यक्ति ने अतीत में जिनको थप्पड़ मारा था उनके पास जाकर उन्हें खुद को जोर जोर से थप्पड़ मारने के लिए बाध्य किया जिससे उनके उस अशुभ कर्म का प्रायश्चित हो जाये। इन कार्यों को करके पटवारी फूल सिह भक्त फूल सिंह के नाम से विख्यात हुए।

आचार्य जी ने कहा कि दीर्घकाल तक निरन्तर सन्ध्योपासना आदि का अभ्यास करने से दृण भूमि होती है। उन्होंने कहा इन कार्यों को करते हुए इनके प्रति श्रद्धा का गहरा भाव भी होना चाहिये। उन्होंने आगे कहा कि सन्ध्या के लिए निश्चित स्थान, निश्चित समय सहित नियमितता और श्रद्धा होनी चाहिये तभी इन कार्यों में सफलता मिलती है। उन्होंने कहा कि श्रद्धा के बिना कोई कार्य नहीं होता। उपासना के लिए श्रद्धा की आवश्यकता होती है। अभ्यास के बिना उपासना में सफलता नहीं मिलती। आचार्य जी ने कहा कि उपासना करने वाला व्यक्ति दूसरों की सेवा करता है। इसके बदले में वह उनसे किसी प्रकार की प्रशंसा नहीं चाहता। वह सोचता है कि जिस प्रकार वह परमात्मा के बनाये पदार्थों का उपयोग करता है उसी प्रकार दूसरों की सेवा करना उसका भी कर्तव्य है। ईश्वर प्रणिधान की चर्चा कर आचार्य जी ने कहा कि भगवान को हर समय याद रखना व उसकी कृपाओं को स्मरण करना ईश्वर प्रणिधान है। आपने स्वामी श्रद्धानन्द जी और पं. लेखराम जी का इस विषय का एक संस्मरण सुनाते हुए बताया कि दोनों महापुरुषों द्वारा एक यात्रा करते हुए पण्डित लेखराम जी द्वारा बिना शरीर शुद्धि के सन्ध्या करने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आपत्ति की तो पंडित लेखराम जी ने कहा था कि शारीरिक शुद्धि करना शरीर का धर्म है जबकि सन्ध्या करना आत्मा का धर्म है। आचार्य जी ने कहा कि लेखराम जी ने निष्कर्ष रूप में कहा था कि शरीर का धर्म आत्मा के धर्म पालन करने में बाधक नहीं बनना चाहिये। सन्ध्या व ईश्वर प्रणिधान को आगे बढ़ाते हुए आचार्य जी ने कहा कि जो मनुष्य ईश्वर को समर्पण करते हैं ईश्वर उन्हें सम्भालता है। ऐसा करके उपासक को समाधि का लाभ होता है।

5 क्लेशों के अन्तर्गत अविद्या क्लेश की चर्चा करते हुए आचार्य जी ने कहा कि अनित्य को नित्य तथा अपने को अमर मानना अर्थात् अपनी मृत्यु के प्रति विचार न करना व उनकी उपेक्षा करना अविद्या है। अपवित्र को पवित्र और पवित्र को अपवित्र मानना भी अविद्या है। आचार्य जी ने अभिनिवेश क्लेश की चर्चा की और उस पर विस्तार से प्रकाश डाला। आज के स्वाध्याय का समापन कराते हुए आपने कहा कि परमात्मा पुरुष विशेष है। वह पुरुष विशेष ही ईश्वर है। इसके बाद दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री सुखवीर सिंह आर्य जी ने आचार्य जी का धन्यवाद किया और स्वाध्याय शिविर में भाग लेने वालों को सूचनायें देने के साथ स्वच्छता व दूसरों के कार्यों में सहयोग करने का भी अनुरोध किया। आयोजन में आर्य विद्वान डा. वेदव्रत आलोक भी पधारे हैं। उन्होंने भी योग विषयक अपने विचारों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि हमें ईश्वर के स्वरूप में स्थित होने के लिए द्रष्टा बनना है। वास्तविक द्रष्टा परमात्मा है। उन्होंने आगे कहा कि उपासना में मन निद्र्वन्द होना चाहिये। डा. वेदव्रत जी ने कहा उपासना में हम अपने चित्त के कुसंस्कारों को साफ करते हैं।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के स्वाध्याय में आचार्य डा. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई पहले पूर्व स्वाध्याय किये हुए उपासना विषय के वेदमन्त्रों व योग सूत्रों का पाठ दोहराते हैं। फिर बाद के मन्त्रों व सूत्रों को पढ़कर उनके ऋषि कृत संस्कृत व्याख्यान के आधार पर उनके अर्थों को बताकर उनकी व्याख्या करते हैं। इसके बाद श्रोताओं को उन मन्त्र व सूत्रों के ऋषि के हिन्दी अर्थों को पढ़ने को कहते हैं और उसमें आये विषयों पर टिप्पणी व व्याख्यान देते हैं। इससे पूरा विषय श्रोताओं को हृदयंगम हो जाता है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और गुरुकुल पौंधा के संयुक्त तत्वावधान में यह आयोजन सम्पन्न हो रहा है। दिल्ली सभा के उपमंत्री श्री सुखवीर सिंह आर्य जी यहां पहले से पधारे हुए हैं और हर कार्य में उपस्थित रहकर शिविरार्थी की तरह स्वयं भी लाभ उठाते हैं। कल सायं तक इस शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों की संख्या लगभग 150 तक पहुंच गई थी। गुरुकुल में सभी शिविरार्थियों के निवास व भोजन की अच्छी व्यवस्था है। सभी शिविरार्थी इस स्वाध्याय शिविर को उपयोगी अनुभव कर रहें हैं और उन्हें इससे ऋषि के सभी ग्रन्थों का अध्ययन करने की प्रेरणा मिल रही है। दिल्ली सभा और गुरुकुल पौंधा का यह प्रयास पूर्णतः सफल है, ऐसा सभी का अनुभव है। शिविर की सफलता के पीछे एक प्रमुख कारण गुरुकुल के आचार्य डा. धनंजय जी की विगत कुछ महीनों से कठोर तप व साधना है जिसके हम प्रत्यक्षदर्शी हैं। विगत 17 वर्षों में गुरुकुल ने एक पौधे से वट वृक्ष का सा रूप ले लिया है, इसमें भी मुख्य भूमिका में हमें आचार्य धनंजय जी का तप व पुरुषार्थ ही दृष्टिगोचर होता है। ईश्वर आचार्य धनंजय जी को अच्छा स्वास्थ्य, सुख व दीघार्य प्राप्त करें, ऐसी प्रार्थना हम ईश्वर करते हैं। ओ३म् शम्।

-मनमोहन कुमार आर्य

पताः 196 चुक्खूवाला-2

देहरादून-248001

फोनः09412985121

ओ३म्

‘अनुकरणीय जीवन के धनी ऋषि भक्त विद्वान श्री इन्द्रजित देव’

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

ऋषि भक्त आर्य विद्वान श्री इन्द्रजित् देव जी आर्यसमाज की लेखों एवं उपदेशों के द्वारा सेवा करने वाले योग्य विद्वान हैं। हम विगत लगभग तीन दशकों से पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख पढ़ते आ रहे हैं। गुरुकुल पौंधा, देहरादून एवं अजमेर के ऋषि मेले में उनके व्याख्यान सुनने का अवसर हमें मिला है। विगत कुछ अवसरों पर आप देहरादून आये हैं। वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून एवं गुरुकुल पौंधा के विगत अनेक उत्सवों में आपके दर्शन करने और वार्तालाप करने का संयोग भी हुआ है। आपका जीवन बहुत ही सरल जीवन है। ऋषि दयानन्द की विचारधारा का देश विदेश में प्रचार प्रसार हो, यह भाव व स्वप्न आपके मन व मस्तिक में प्रायः हर क्षण होता है, ऐसा हमें अनुभव होता है। हमारी आपसे पहली भेंट सन् 1997 में कादियां (पंजाब) में मनाई गई पंडित लेखराम बलिदान शताब्दी समारोह के अवसर पर हुई थी। उसके बाद देहरादून एवं अजमेर में आपसे भेंट हुई हैं। गुरुकुल पौंधा व तपोवन आश्रम के विगत उत्सवों में आपसे विस्तृत वार्तालाप करने का अवसर भी हमें मिला है। आपने आर्यसमाज विषयक कुछ महत्वपूर्ण संस्मरण व घटनायें हमें सुनाई थी जिन्हें हम अपने लेखों के माध्यम से कुछ माह पहले प्रस्तुत कर चुके हैं। गुरुकुल पौंधा के इस वर्ष उत्सव के उपलक्ष्य में आप 29 मई, 2017 को देहरादून पधारे हैं। यमुनानगर से ही आर्यजगत के प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध भजनोदपेशक श्री ओम् प्रकाश वर्मा जी भी पधारे हुए हैं। श्री वर्मा जी ने गुरुकुल में अपनी एक कुटिया बनवा रखी है। उनका एक पौत्र भी गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहा है। यह पौत्र बहु-प्रतिभावान विद्यार्थी हैं। उत्सव में इस युवा विद्यार्थी की प्रस्तुतियां देखकर हमें बहुत प्रसन्नता होती है। विगत तीन दिनों से हमें श्री इन्द्रजित् देव जी और श्री

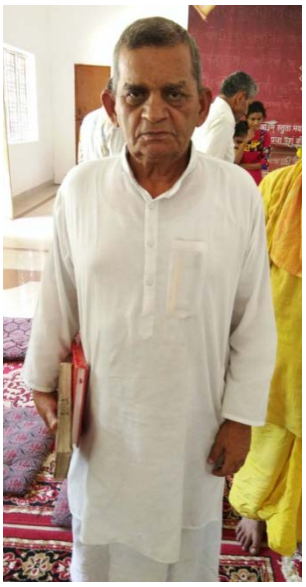

ओम्प्रकाश वर्मा जी आदि अनेक विद्वानों के दर्शन हो रहे हैं और इनसे वार्तालाप सहित आर्यसमाज के इतिहास से जुड़ी दुर्लभ बातों को सुनने का अवसर भी मिल रहा है।

श्री इन्द्रजित् देव जी का जन्म लाहौर में 27 मई, सन् 1938 को हुआ। आपके पालनकर्ता पिता श्री कृष्ण दास जी और माता श्री भागवन्ती जी हैं जिनकी छत्रछाया में आपका जीवन व्यतीत हुआ। आपने बताया कि आपके पालक माता-पिता और जन्मदाता माता-पिता दो-दो हैं। यह नाम पालनकर्ता माता-पिता के हैं। आपके पिताजी आर्यसमाजी थे और आर्यसमाज के अनेक आन्दोलनों में आपने भाग लिया था। आपके पिता सन् 1957 के पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जेल भी गये थे। पंजाब में उन दिनों जब कहीं लाइलाज बीमारी प्लेग का प्रकोप होता था तो आपके पिता उन स्थानों पर जाकर रोगियों की सेवा व उपचार करने में अपनी सेवायें देते थे। आपके 7 भाई भाई एवं दो बहिनों में अब दो भाई दिवंगत हो चुके हैं। प्रायः सभी यमुनानगर व समीप के स्थानों पर निवास करते हैं। आपने लाहौर में कक्षा चार तक की शिक्षा प्राप्त की थी। 14 अगस्त सन् 1947 को भारत का विभाजन होने पर आपको भारत आना पड़ा। आप अमृतसर आकर रहे और वहां कक्षा दस तक की शिक्षा प्राप्त की। आप बताते हैं कि सन् 1947 को भारत में आने पर आपको गरीबी का बहुत समीप से अनुभव हुआ। आपने पंजाब विश्व विद्यालय से प्रभाकर, हिन्दी आनर्स एवं साहित्यरत्न (इलाहाबाद) की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। आपने पंजाब राज्य के सिंचाई विभाग में नौकरी की। क्लर्क से आरम्भ कर आप आफीस सुपरिटेण्डेंट पद तक पहुंचे। रिश्वत आदि न लेने के कारण आपको ऐसे कामों पर रखा जाता था जहां रिश्वत की गुंजाइश नहीं होती थी। आप लम्बे समय तक हिमाचल प्रदेश में भी सेवारत रहे। श्रीमती सुमनलता जी आपकी सहधर्मिणी थी। सन् 1969 में आपकी धर्मपत्नी जी की स्टोव जलाते समय दुर्घटना हो जाने से दुःखद मृत्यु हुई थी। आपके एक पुत्र एवं एक पुत्री हैं। आपकी पुत्री कविता वाक्चनवी आर्य विदुषी हैं। उच्च कोटि की लेखिका एवं सम्पादिका हैं। उनके पति दहन विज्ञान में उच्च कोटि के वैज्ञानिक हैं। आप दोनों सम्प्रति अमेरिका में रहते हैं। आपने बताया कि पुत्री के विवाह में वर पक्ष की ओर से स्वामी डा. सत्यप्रकाश जी और पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी बारात में आये थे। आपने अपने पुत्र व पुत्री का विवाह जन्मना जाति में न कर गुण, कर्म, स्वभावानुसार अन्तर्जातीय विवाह किया है एवं दोनों विवाह बिना दहेज लिये व दिये किये हैं।

श्री इन्द्रजित् देव जी पहले उपन्यास एवं हिन्दी कवितायें लिखते थे। सन् 1978 से 1982 के मध्य में आपने आर्यसमाज की पत्र पत्रिकाओं में लेख लिखना आरम्भ किया जो निरन्तर चल रहा है। 'देव' आपका काव्य रचना का उपनाम है। कवि नीरज जी को आप अपना प्रेरक कवि मानते हैं। सरकारी सेवा से आप सन् 1993 में सेवा निवृत हुए। आपने सेवा निवृति की तिथि से 3 वर्ष पूर्व ही स्वैच्छिक सेवा निवृति के लिए आवेदन किया था परन्तु उसे स्वीकार नहीं किया गया। इस कारण आपने अपनी सभी अर्जित अवकाश ले लिये थे। आपने रोजड़ में दर्शन योग विद्यालय के अनेक शिविरों में भी भाग लिया है। उन दिनों कुछ काल तक आप वैराग्य की स्थिति में भी रहे।

आचार्य इन्द्रजित् जी यमुनानगर में रहते हैं। भजनोपदेशक श्री ओम् प्रकाश वर्मा जी से आपकी घनिष्ठता है। आपने वर्मा जी के जीवन के अनुभव प्रायः सुनते रहे हैं। उन पर आधारित आपके लगभग 23 लेख आर्य पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें इतिहास विषयक महत्वपूर्ण जानकारी है। परोपकारिणी सभा अजमेर के अध्यक्ष कीर्तिशेष डा. धर्मवीर जी के आप बहुत निकट रहे हैं। आपने उनसे जुड़े भी अनेक संस्मरण हमें सुनाये हैं। आपने बताया कि आर्य विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी के परामर्श से उन्होंने परोपकारी मासिक पत्रिका का प्रकाशन पाक्षिक किया था। आप स्थानीय लोगों से मिलते समय व रेल यात्रा करते हुए जिन लोगों के सम्पर्क में आते थे, उनका नाम व पता नोट कर लेते थे और उन्हें परोपकारी पत्रिका प्रेषित करते थे। किसी पाठक का शुल्क न आने पर भी आप पत्रिका को बन्द नहीं करते थे। पत्रिका घाटे में चलती है परन्तु इसकी आपको चिन्ता नहीं थी। आपका मानना था कि पत्रिका के माध्यम से परोपकारिणी सभा विषयक जानकारियां लोगों तक पहुंचती हैं। डा. धर्मवीर जी के साथ आपने देश के दूरस्थ स्थानों की अनेक प्रचार यात्रायें भी की हैं। हमने उनकी बातों से अनुभव किया कि डा. धर्मवीर जी के असामयिक वियोग से परोपकारिणी सभा एक प्रकार से निष्प्राण सी हो गई है।

परोपकारिणी सभा में जो बड़े बड़े भव्य भवन बने हैं उनका समस्त श्रेय भी डा. धर्मवीर जी को है। आपने व वर्मा जी ने हमें यह भी बताया कि डा. धर्मवीर जी आशु उपदेशक थे। उन्हें किसी भी विषय पर व्याख्यान के लिए कहा जाये और दो मिनट पहले ही निवेदन करें, उस पर भी वह अनेक प्रमाणों व उदाहरणों से प्रभावशाली व्याख्यान देते थे।

श्री इन्द्रजित् देव जी आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में मनसा, वाचा कर्मणा लगे हुए हैं। आप स्वस्थ हैं और आर्यसमाज के प्रचार के लिए अनेक स्थानों पर आते जाते रहते हैं। आपका जीवन एवं व्यक्तित्व सरल है और सबसे घुल मिल जाते हैं। आपका अध्ययन भी विस्तृत है और आर्यसमाज की इतिहास की बहुत सी घटनायें आपको स्मरण हैं जिनका प्रयोग वह वार्तालाप एवं उपदेशों में करते हैं। हमने उन्हें गुरुकुल या अन्यत्र होने वाले सभी विद्वानों व भजनोपदेशकों के उपदेशों में एक सामान्य श्रोता की भांति बैठे हुए उपदेश व भजन श्रवण करते हुए देखा है। यह गुण बहुत कम उपदेशकों व भजनोपदेशकों में होता है। मंच पर आप तभी जाते हैं कि जब आपको बुलाया जाता है। आर्यसमाज व इसकी संस्थाओं के उत्सव आदि में आप बिना उपदेश के लिए बुलाये ही एक श्रोता के रूप में सम्मिलित होते हैं। गुरुकुल पौंधा भी आप एक श्रोता के रूप में आये हैं। यहां के अधिकारी आपकी योग्यता एवं स्वभाव से परिचित हैं। यही कारण है कि कल रात्रि आपका उपदेश हुआ था। अभी 4 जून तक और भी कई उपदेश हो सकते हैं। गुरुकुल में आजकल ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्वाध्याय शिविर चल रहा है। उसमें भी एक शिविरार्थी की तरह आप समय पर अपनी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पुस्तक लेकर पहुंच जाते हैं और पूरा समय बैठते हैं। शिविराध्यक्ष डा. सोमदेव शास्त्री जी से कुछ विषयों पर आप प्रेमपूर्वक चर्चा भी करते हैं। आपका सरल स्वभाव हमें विशेष रूप से प्रेरणा देता है। हमारे सभी विद्वान ऐसे ही हों तो प्रचार ओर अधिक बढ़ सकता है। इसी के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

-मनमोहन कुमार आर्य

पताः 196 चुक्खूवाला-2

देहरादून-248001

फोनः09412985121

ओ३म्

‘मन को ईश्वर में लगाने से मन में निर्मलता आती हैः डा. सोमदेव शास्त्री’

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आज इस लेख में हम गुरुकुल पौंधा देहरादून में आयोजित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्वाध्याय शिविर के दूसरे दिन 30 मई 2017 को आयोजित अपरान्ह सत्र में आर्य विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री द्वारा वर्णित कुछ विषयों पर प्रकाश डाला रहे हैं। आचार्य जी ने बताया कि सांख्य दर्शन में जड़ व चेतन का विवेचन है। आपने एक अन्धे व एक लंगड़े की कथा सुनाई और कहा अन्धा व लगड़ा एक दूसरे की सहायता करके अर्थात् अन्धा लंगडे को अपने कन्धे पर बैठाकर दोनों गन्तव्य पर पहुंच सकते हैं। आचार्य जी ने शरीर और आत्मा का उदाहरण देकर कहा कि आत्मा भी अन्धे शरीर की सहायता से अपने लक्ष्य धर्म अर्थ काम व मोक्ष की प्राप्ति करता हे। कथा में आचार्य जी ने आत्मा को लगंड़ा एवं शरीर को

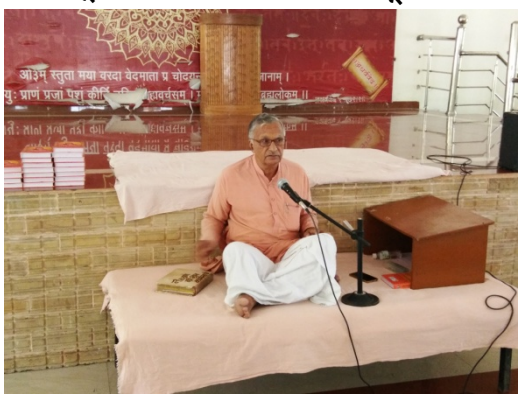

अन्धा बताया। उन्होंने कहा कि शरीर जीवात्मा को उसके गन्तव्य पर पहुंचा कर उससे पृथक हो जाता है। आचार्य जी ने कहा कि जीवात्मा प्रकृति से अलग है। शरीर व आत्मा का विवेचन सांख्य दर्शन में होता है। योग दर्शन में आत्मा और परमात्मा इन दो चेतन पदार्थों का वर्णन है। वेद मन्त्र के आधार पर विद्वान आचार्य जी ने कहा कि शरीर में रहने वाले जीवात्मा को 10 अंगुल वाले शरीर की आवश्यकता होती है। ब्रह्माण्ड में रहने वाले परमात्मा को 10 अंगुलियों वाले शरीर की आवश्यकता नहीं है। योग दर्शन में इनका विस्तृत वर्णन है। स्वामी दयानन्द जी के अनुसार वेदों का कोई मन्त्र ऐसा नहीं है जिसमें कि ब्रह्म का वर्णन न हो। सत्य उसे कहते हैं जिसका कोई कारण न हो। सत्य नित्य होता है। जो तीनों कालों में रहता है उसे सत्य कहते हैं। आचार्य

जी ने कहा कि जहां ईश्वर, जीव और प्रकृति का विवेचन किया जाता है उसे सत्संग कहते हैं। जिसको अपनी सत्ता का अनुभव होता है उसे चित वा चेतन पदार्थ कहते हैं। जहां पर इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, ज्ञान व प्रयत्न होता है वहां आत्मा होता है। ज्ञान व प्रयत्न को उन्होंने आत्मा की पहचान बताया। जीवात्मा प्रयत्न सुखों की प्राप्ति तथा दुःखों को छोड़ने के लिए करता है। आनन्द हमारा वा जीवात्मा का स्वाभाविक गुण नहीं अपितु नैमित्तिक गुण है।

अग्नि में पदार्थों को जलाने का गुण उसका स्वाभाविक गुण है। पाणिनी के अनुसार अन्तर्यामी उसे कहते हैं जो अन्दर से नियमन करता है। ईश्वर सब पदार्थों के अन्दर विद्यमान है। इसलिये वह अन्दर से सब व्यवस्थायें करता है। आचार्य जी ने कहा कि परमात्मा का कोई भी निर्णय गलत नहीं होता क्योंकि वह सबका हर काल में साक्षी होता है। विद्वान आचार्य जी ने कहा कि ईश्वर की स्तुति करने से ईश्वर से प्रीति होती है। ईश्वर की प्रार्थना करने में मनुष्यों को निरभिमानता का गुण प्राप्त होता है। ईश्वर की व्यवस्था में स्वयं को समर्पित कर देने से ईश्वर उस मनुष्य को ठीक प्रकार से संभालता है। आचार्य जी ने कहा योग दर्शन पर व्यास मुनि का भाष्य पढ़ना चाहिये। मनुष्य का मन संकल्प और विकल्प करता है तथा बुद्धि उनका निर्णय करती है।

आचार्य जी ने कहा कि योग चित्त की वृत्तियों के निरोध को कहते हैं। आत्मा के साधन शरीर में मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, सभी ज्ञान व कर्मेन्दियां आदि हैं। प्रत्याहार की चर्चा कर आचार्य जी ने कहा कि भोजन करना बुरा नहीं है अपितु भोजन की उतनी मात्र लेनी चाहिये जो हमारे स्वास्थ्य को किसी प्रकार से हानि न पहुंचायें। आत्मा को उन्होंने शरीर रूपी रथ का स्वामी बताया। मन को लगाम, बुद्धि को चालक, इन्द्रियों को रथ के घोड़े, विषयों को रास्ते तथा जीवात्मा को उस रथ का रथी बताया। वृत्तियों की चर्चा कर आचार्य जी ने कहा कि क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध यह 6 प्रकार की वृत्तियां होती हैं। क्षिप्त वह वृत्ति है जिसमें तमो गुणों की अधिकता होती है। मृढ़ वह अवस्था है जिसमें मुनष्य सही और गलत का निर्णय नहीं कर पाता। यह रजो गुण की प्रधानता के कारण होता है। विक्षिप्त वृत्ति में रजोगुण व तमोगुण मिलकर सतोगुण को दबा देते हैं। सतोगुण की प्रधानता से एकाग्रता की स्थिति बनती है। आचार्य जी ने कहा कि प्रातः 3 से 6 बजे तक सतोगुण प्रधान रहता है जिसमें अशान्ति नहीं रहती। दिन निकलने पर रजोगुण प्रधान हो जाता है। सायं व रात्रि को तमोगुण प्रधान रहता है जिसके प्रभाव से मनुष्य में आलस्य रहता है व वह आराम करना पसन्द करता है। आचार्य जी ने कहा कि आत्मा, सत, रज व तम गुणों से ऊपर है। वृत्तियों का परमात्मा में रूक जाना निरुद्ध अवस्था है। भक्ति का सच्चा अर्थ ईश्वर की आज्ञा पालन में तत्पर रहना है। मन की वृत्तियों को बाह्य विषयों से रोकने पर वह परमात्मा में स्थिर होती हैं।

आचार्य जी ने स्वस्थ व अस्वस्थ मनुष्य की मीमांसा भी की व उसके अनेक उदाहरण दिये। उन्होंने कहा कि कोई मनुष्य मकान की प्राप्ति तो कोई शरीर के रोगों में टिका हुआ है। चिकित्सा शास्त्र का उल्लेख कर आचार्य जी ने कहा कि शरीर में रोग के दो कारण होते हैं। शारीरिक व मानसिक। जीवन में प्रसन्नता की अल्पता भी शरीर को रोगी बनाती है। अतः मनुष्य को प्रसन्न रहने का अभ्यास करना चाहिये जिससे वह अस्वस्थ न हो। आचार्य जी ने कहा कि जीवात्मा अपने स्वरूप सत्य व चित्त में स्थिर होकर सच्चिदानन्द परमात्मा में स्थिर हो जाता है। अपने स्वरूप में स्थिर हुए बिना जीवात्मा परमात्मा में स्थिर व स्थित नहीं हो सकता। आचार्य जी ने कहा कि मन को ईश्वर में लगाने से मन में निर्मलता आती है। जो परमात्मा का चिन्तन नहीं करते उनके मन में कलुषता आती है। आचार्य जी ने पांच वृत्तियों प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय व प्रमा आदि की भी चर्चा की व उनके स्वरूप पर प्रकाश डाला और इसके उदाहरण भी दिये।

इसी के साथ मंगलवार 30 मई, 2017 का अपरान्ह सत्र का ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्वाध्याय शिविर सम्पन्न हुआ। इसके बाद दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी श्री सुखवीर सिंह जी ने आचार्य जी का धन्यवाद करते हुए कुछ सूचनायें दी। शान्ति पाठ के साथ शिविर के सदस्य विसृजित हुए।

-मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001 /फोनः09412985121